पाठ 13. गुलीवर की यात्रा

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ एक विदेशी कहानी है। इसका उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि हम चाहे किसी भी स्थान पर हों, वहाँ के लोग अनजान हों या परिचित, हमें वहाँ के वातावरण में, रहन-सहन में स्वयं को ढालने का प्रयत्न करना चाहिए।

पाठ का सारांश

गुलीवर नाम का एक यात्री दक्षिणी सागर के तूफ़ान में फँसकर लिलिपुट नामक अनजान टापू पर पहुँच जाता है। वहाँ के लोगों का आकार बहुत ही छोटा था। गुलीवर तो उनके लिए किसी विशालकाय राक्षस के समान था। धीरे-धीरे वह उन लोगों में घुल-मिल जाता है और वहाँ के लोग भी उसकी दयालुता देख उसे अपना मानने लगते हैं। गुलीवर दूसरे देश के आक्रमण से लिलिपुट की रक्षा करता है। लिलिपुट के लोग तथा बादशाह गुलीवर को बहुत प्रेम से विदा करते हैं। गुलीवर के लिए यह यात्रा उसकी अविस्मरणीय यात्रा थी।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्नों पर चर्चा करें। पाठ की पृष्ठभूमि तैयार करते हुए बच्चों से पूछें कि वे कभी किसी जगह की यात्रा पर गए हैं। इस प्रश्न के उत्तर में यदि बच्चे वैष्णो देवी की यात्रा, शिमला की यात्रा, जयपुर की यात्रा आदि के बारे में बताएँ, तो उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर दें। उनसे उनके अनुभव सुनें। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को बताएँ कि यह एक विदेशी कहानी है। बच्चों से पूछें–

- ❖ यदि वे ऐसे किसी अनजान टापू या जगह पर पहुँच जाएँ तो क्या करेंगे–क्या घबरा जाएँगे या वहाँ के लोगों के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास करेंगे?
- ❖ लिलिपुट के लोग गुलीवर से बहुत प्रेम करने लगे थे। यदि आप गुलीवर की जगह होते तो क्या आप भी लिलिपुट छोड़कर चले जाते? यदि हाँ, तो क्यों?
- ❖ यदि किसी अनजान व्यक्ति को आपकी सहायता की आवश्यकता हो तो आप क्या करोगे? (इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा बच्चों की निर्णय-क्षमता का आकलन हो सकेगा।)
- ❖ पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करने का प्रयास करें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।